अति मच्छीमारी एक विकट समस्या – गोवा राज्य के संदर्भ में अध्ययन

हृषिकेश बा. पवार, सुशांत वि. सनये, रायादुर्गा अ. श्रीपाद, बबन इंगोले, संतोष जैसवाल, उद्धव सूर्यवंशी, अश्विनी पां. पवार एवं प्राची प्र. परब

सी.एस.आई.आर. – राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, दोना पावला, गोवा-403 004

कोंकण ही नहीं पूरी दुनियाँ में चलने वाली भयंकर मच्छीमारी को देखते हुए ऐसा लगता है कि आने वाले कुछ सालों में मच्छीमारी व्यवसाय समाप्त हो सकता है। इसमें विशेष रूप से कोंकण के छोटे मछुआरों पर भारी संकट आ सकता है। सरकार ने मछली दुष्कार रोकने के लिये आज तक प्रभावी योजनाएँ नहीं चलाई हैं। यदि आने वाले भविष्य में मच्छीमारी पर प्रभावी नियंत्रण नहीं रखा गया तो सिर्फ कोंकण ही नहीं बल्कि भारत और पूरी दुनियाँ में बिना मछली के ही समुद्र रह जायेंगे। मत्स्य दुष्कार सिर्फ कोंकण और भारत तक ही सीमित नहीं है वरन् यह पूरी दुनिया के समुद्री तटीय देशों के लिये है। दुनिया भर में इस समस्या से उभरने के लिये योजनाएँ शुरू हो रही हैं लेकिन हमारे यहाँ इस व्यवसाय को सिर्फ 'मछली की लूट' के नजर से ही देखते हैं। परिणामस्वरूप आने वाले कई सालों में समुद्र में मछली बचेगी या नहीं यह प्रश्न है।

एक उत्कृष्ट, प्रोटीन आहार होने के कारण मछली खाने वालों की संख्या दुनिया भर में बढ़ रही है। पूरी दुनिया में लगभग 2.6 अरब लोग मछली का आहार लेते हैं और यह संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इतने लोगों की भूख मिटाने के लिये विशाल समुद्र भी कम पड़ रहा है। बाजार में मछली की मांग अधिक होने के कारण इससे जुड़े व्यवसाय का लाभ भी बड़ी तेजी से बढ़ा है। इसके कारण अमीर लोगों ने इसमें लागत लगाना शुरू कर दिया है। आजकल आधुनिक यंत्र और जाल का प्रयोग करके छोटी-छोटी मछलियों को चलनी की तरह छान लेते हैं। अत्यधिक लालच के कारण छोटी-छोटी मछलियाँ भी मारी जा रही हैं और उनके बच्चे भी मारे जा रहे हैं। परिणामस्वरूप बड़ी मछलियों की संख्या कई गुना कम हुई है। इसके अलावा दुनियाँ भर में सैकड़ों मछली प्रजातियाँ नष्ट हो चुकी है। इसके अतिरिक्त मच्छीमारी के कारण दुनिया की 2% मत्स्य सम्पदा प्रति साल हमेशा के लिये खत्म हो जाती है। सन् 1950 से आज तक के FAO के अध्ययन के अनुसार औसत समुद्री खाद्य श्रृंखला संकीर्ण होती जा रही है। इसके कारण लम्बा जीवन यापन करने वाली मछलियाँ नष्ट हो रही हैं और छोटा जीवन यापन करने वाली मछलियाँ अर्थात् छोटी मछलियाँ जो प्लवक खाती हैं और समुद्र की ऊपरी सतह पर रहती हैं, इनकी संख्या बढ़ रही है। दुनियाँ भर में 75% से भी ज्यादा मच्छीमारी चल रही है। एक सर्वेक्षण के अनुसार 2050 तक मत्स्य सम्पति कंगाल हो जाएगी। दुनिया भर में 50 करोड़ लोग इस व्यवसाय से जुड़े हैं। ये व्यवसाय कम होने से बेरोजगारी बढ़ेगी। आज जैसी लूट चलती रही तो इस व्यवसाय का भविष्य अंधकारमय है।

गोवा राज्य को 104 किलोमीटर समुद्र का किनारा मिला है। इस पर 30,225 लोगों की रोजी-रोटी चलती है। उसमें से 11,944 लोग प्रत्यक्ष रूप से मत्स्य व्यवसाय से जुड़े हैं। गोवा राज्य का मछली उत्पादन 1963 में 17000 टन था जो यांत्रिकीकरण से 1993 में

(डॅनियल पॉवली, 2003)

1,02,922 टन हो गया। मछली उत्पादन के आँकिड़े ऐसा दिखा रहे हैं कि हमने अधिकतम कायम उत्पादन (Maximum Sustainable Yield) की मर्यादा पार कर ली है, उसके कारण आने वाले सालों में मछली उत्पादन में कमी हो रही है। FAO के अनुसार समुद्र तटीय देश ज्यादा मछली पा सकते हैं, अगर वो ज्यादा पकड़ी गई मछली की प्रजातियों को फिर से उभारने का मौका दें तथा मछली अपशिष्ट रोकें और अच्छी तरह से मत्स्य सम्पति को नियंत्रित करें।

राष्ट्रीय स्तर पर मत्स्य दुष्कार की समस्या को गंभीरता से लेकर उसके ऊपर प्रभावी योजनाएँ चलाई जा रही हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अतिरिक्त मच्छीमारी को नियंत्रित करने के लिये समुद्री प्रबंध परिषद नामक संगठन प्रभावी रूप से कार्य कर रहा है। 1997 में स्थापित इस संगठने अपना आधार मजबूत कर लिया है। यह संस्थान विभिन्न परीक्षणों के बाद गुणवत्ता एवं समुद्री पर्यावरण को ध्यान में रखकर मत्स्य उत्पादन को एक चिन्ह प्रदान करते हैं। पर्यावरण के अनुकूल उत्पादन होने का यह चिन्ह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत महत्वपूर्ण है। आज तक इस संगठन ने 41 देशों के 2000 उत्पादकों को यह चिन्ह दिया है। कई देशों में मत्स्य दुष्कार नियंत्रित करने के लिये जालदार जहाज की संख्या नियंत्रित की गई तथा नये मच्छीमारी जहाजों को अनुमति देना बंद कर दिया गया। नियमों एवं कानून का कठोरता से पालन किया गया। मछली जाल के काज के आकार को बढ़ा दिया गया है। भारत में इस नियम के प्रति बहुत सारे कानून बनाये गये हैं, लेकिन हमारे यहाँ थैली जाल जैसे जाल की काज 1 सेमी जितना छोटा होता है। जिसमें से मछली का छोटा बच्चा भी छूट कर नहीं जा सकता है। हमारे यहाँ आज की तारीख में होने वाले कानून और कायदों के पालन करने के लिये प्रभावी योजनाएँ बनाई जायें तो बहुत सारे प्रश्न हल हो सकते हैं। जाहिर रूप से इसके लिए राज्य कार्यकर्ताओं की सकारात्मक मानसिकता की आवश्यकता है।

मछली पकड़ने का जालदार जहाज।

मालीम बंदरगाह, पणजी।

गोवा के पणजी इलाके में स्थित एक मछली बाजार।

सारणी 1. भारत और गोवा के मत्स्य संसाधन।

	भारत	गोवा
किनारों की लंबाई	6068 किमी (द्वीप सहित 8129 किमी)	104 किमी
अवतरण केंद्र	1511	33
मछुवारों के गांव	3288	39
मछुवारों की संख्या	399214	10545
मछुवारों के कुटुंब	864550	2189
पारंपरिक मछुवारों के कुटुंब	789679	2147
जालदार जहाज	35228	834
गलफडा जाल	20257	12
थैली जाल	1213	296
कुल यांत्रिकी जहाज	72559	1142
इंजिन वाले जहाज	71313	1297
बिना इंजिन वाले जहाज	50618	227
कुल मछलीमार जहाज	194490	2666

(स्त्रोत: भारत की समुद्री मात्स्यिकी की गणना, सी.एम.एफ.आर.आई, 2010)

सारणी 2. गोवा राज्य की कुछ आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण मछलियाँ।

शास्त्रीय नाम	स्थानीय नाव	आम अंग्रेजी नाव
Escualosa thoracata	वैली	व्हाइट सारडीन
Sardinella longiceps	तार्ली	ऑइल सारडीन
Sardinella fimbriata	पेड	लेस्सर सारडीन
Opisthopterus tardoor	पाचाली	हेरिंग
Anchoviella commersonii	मोतियाली	अँकोवी
Chirocentrus dorab	कर्ली	वोल्फ हेरिंग
Chanos chanos	घोलशी	मिल्क फिश
Osteoeneiosus militaris	सांगोट	कैट फिश
Hemiramphus xanthopterus	टॉकी	हाल्फ बीक
Mugil cephalus	शेवटो	मलेट
Eleutheronama tetradatylus	रावस	थ्रेड फिन
Lates calcarifer	चनाक	सी बास
Epinephalus malabaricus	गोब्रो	ग्रुपर
Sillago sihama	मुड्डोशी	सैंड व्हाइटिंग
Lactaruis lactaris	सौनदाले	बटर फिश
Carageides oblongus	कोंकार	ट्रवेली
Lutiamus johnii	तामंबसो	स्नैपर
Lutiamus argentimaculatus	तामंबसो	रेड स्नैपर
Nemipterus japoniccus	राणा	थ्रेड फिन ब्रीम
Johnius dussumieri	धोडीयारे	ज्यू फिश
Johnius sina	कायाडु	ज्यू फिश
Gtolithus maculates	फोरड्के	ज्यू फिश
Etraplus suretensis	काळुंदर	पर्ल स्पॉट
Rastrellier kanagurta	बांगडो	मैकेरेल
Euthynus affinis	बोकडो	ट्यूना
Cybium commersoni	इसवन	सीअर फिश
Pompus argentens	पापलेट	सिल्वर पॉम्फ्रेट
Pampus chinensis	पापलेट	पॉम्फ्रेट
Cynoglossus semifascitus	लेपो	सोल फिश

(स्रोत: अंसारी, 2004)